सद्दालपुत्र
(शकडालपुत्र)

पोलासपुर नगर में सद्दालपुत्र नाम का कुंभकार रहता था। उसके पास मिट्टी के बर्तन बनाने के बड़े-बड़े कारखाने थे। जहाँ पर सैकड़ों कारीगर और हजारों मजदूर काम करते थे। इन कारखानों में अनेक प्रकार के बर्तन बनते। सद्दालपुत्र की अपनी पाँच सौ दुकानें थीं। दूर-दूर के नगरों से लोग इन दुकानों पर बर्तन खरीदने आते थे।

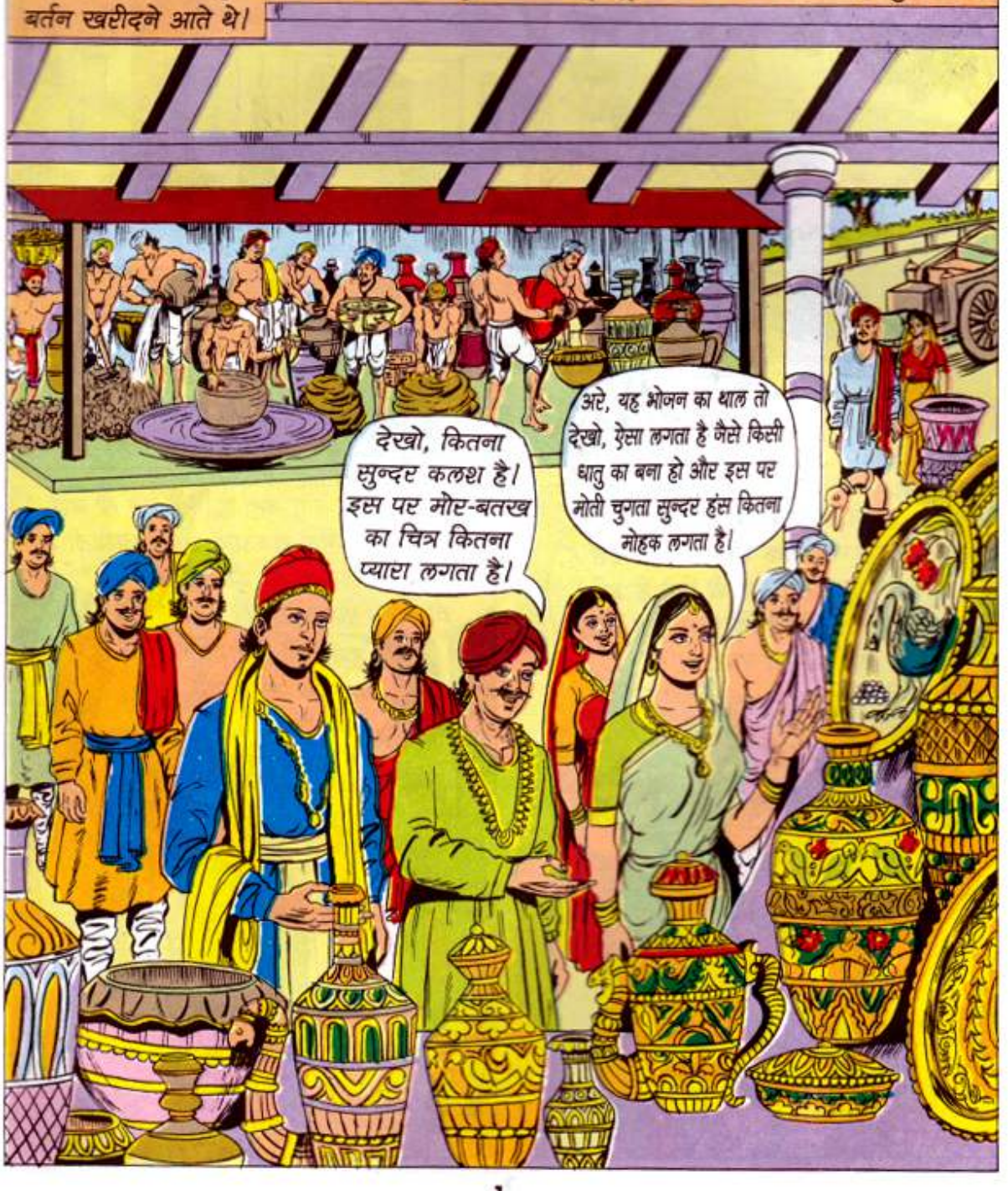

सद्दालपुत्र के पास एक बहुत बड़ी गौशाला भी थी। जिसमें दस हजार गायें थीं। नगर के बाहर उसका एक विशाल हरा-भरा उद्यान था जिसका नाम था 'अशोक वाटिका'। अशोक वाटिका के बाहर कुछ नगरवासी परस्पर चर्चा कर रहे थे।

देखो, इस भव्य उद्यान के मध्य कितना विशाल सुन्दर आवास है।

अरे, तीन कोटि स्वर्ण मुद्राओं का स्वामी है यह। एक कोटि ब्याज में, एक कोटि व्यापार में और एक कोटि भूमि निधान में सुरक्षित कर रखा है।

अरे, भाई इस उद्यान से भी विशाल इसकी गौशाला है। सुना है गौमाता की बहुत सेवा करता है।

हमने तो सुना है, इसके गुरु मंखलिपुत्र गौशालक जो महा निमित्तज्ञ हैं, उन्होंने कुछ मंत्र-तंत्र भी दिये हैं इसे। इसी का प्रभाव है कि दिन-दूना और रात-चौगुना बढ़ रहा है।

नहीं, नहीं ऐसी बात नहीं है, यह तो इसके पिता शकडाल की उपार्जित सम्पत्ति है, इसे तो भाग्य से मिली है।

तब तो बड़ा भाग्यशाली है यह?

हमने भी सुना है यह पक्का भाग्यवादी (नियतिवादी) है।

तभी एक व्यक्ति ने इशारा करके कहा–
वह देखो, अपनी अशोक वाटिका में धर्म में लीन हुआ बैठा है।
और वह देखो, इसकी पत्नी अग्निमित्रा, लक्ष्मी जैसी लगती है....

दर्शक इस प्रकार की बातें कर ही रहे थे कि तभी आकाश में घुँघुरुओं का नाद करता एक देव प्रकट हुआ। सुन्दर पाँच रंग के वस्त्र पहने रवि मुकुट धारण किये, रंग-बिरंगे फूलों की माला कण्ठ में पहने यह देव आकाश में स्थित होकर पुकारता है–
मुझे कौन पुकार रहा है?
सुनो, देवानुप्रिय !

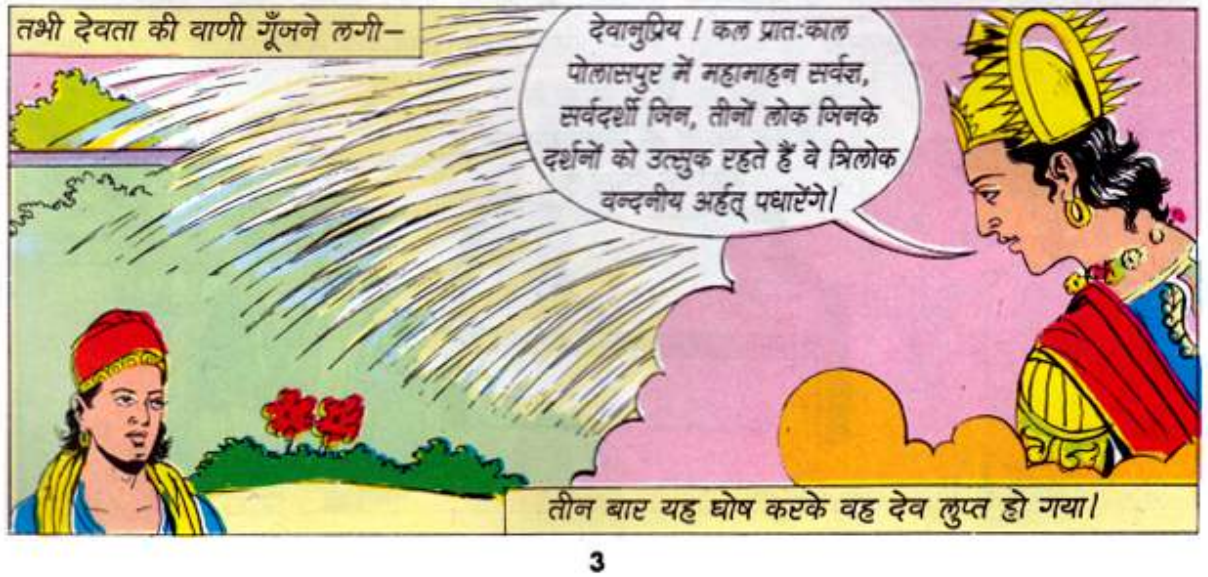
तभी देवता की वाणी गूँजने लगी–
देवानुप्रिय ! कल प्रातःकाल पोलासपुर में महामाहन सर्वज्ञ, सर्वदर्शी जिन, तीनों लोक जिनके दर्शनों को उत्सुक रहते हैं वे त्रिलोक वन्दनीय अर्हत् पधारेंगे।
तीन बार यह घोष करके वह देव लुप्त हो गया।